## सम्पादकीय

# ममता और विजयन कुछ भी कर लें, सीएए को लागू करने से रोक नहीं सकते

नागरिकता संशोधन अधिनियम लागू करने के दिन पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी ने कहा था कि पश्चिम बंगाल में सीएए को अनुमति नहीं दी जाएगी। इसके जरिए मुसलमानों को निकाल दिया। जैसे कि इन लोगों का हिंदुस्तान में कोई योगदान ही नहीं है। मैं बंगाल को डिटेंशन सेंटर नहीं बनने दूंगी। मैं लोगों के बुनियादी हक नहीं छिनने दूंगी। इसके लिए मुझे जान भी कुर्बान करनी पड़ी तो करूंगी। कुछ ऐसा ही केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने कहा, केरल सरकार ने कई बार कहा है कि राज्य में सीएए लागू नहीं किया जाएगा, ये मुस्लिम अल्पसंख्यकों को दोयम दर्जे का नागरिक साबित करता है। सांप्रदायिक तौर पर इस विभाजनकारी कानून के खिलाफ पूरा केरल एकजुट होगा। तमिल एक्टर और तमिलागा वेट्री कड़गम पार्टी के नेता थलपति विजय ने भी विरोध करते हुए कहा कि इसे लागू करना स्वीकार्य नहीं है। सीएए का विरोध करने वाले विरोध करें या फिर जनता को बहकाने के लिए कहें कि वे अपने राज्य में इसे लागू नहीं करेंगे लेकिन हकीकत और कानूनी बाध्यता ये है कि सीएए तो पूरे देश में लागू होकर रहेगा।

दरअसल भारतीय संविधान की 7वीं अनुसूची में तीन सूचियों के तहत राज्य और केंद्र के बीच शक्तियों का बंटवारा किया गया है और संविधान के तहत नागरिकता केंद्र का विषय है। केंद्र के बनाए कानून को राज्यों को लागू करना होता है। वरिष्ठ अधिवक्ताओं के अनुसार केरल की विधानसभा ने सीएए के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया था और सरकार की तरफ से सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका डाली गई थी, लेकिन संसद से पारित कानून को संसद या सुप्रीम कोर्ट से ही रद्द किया जा सकता है। केरल और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्रियों के मौखिक बयानों की कोई कानूनी अहमियत नहीं है। संविधान के अनुच्छेद-256 और 257 के अनुसार राज्यों के लिए केंद्र सरकार के कानून का पालन करना जरूरी है। मुख्यमंत्री संविधान की शपथ लेते हैं जिसके अनुसार संसद के कानून का पालन करना जरूरी है। ऐसा नहीं करने पर राज्यों में संवैधानिक व्यवस्था भंग होने और अनुच्छेद-356 के तहत राष्ट्रपति शासन की संभावना बन सकती है।'

# भाजपा को हरियाणा में खट्टर को थोड़ा पहले ही विदा कर देना चाहिए था

**खट्टर को हटाए जाने का एक प्रमुख कारण राज्य में लगभग 10 वर्षों तक सत्ता की बागडोर संभालने वाली खट्टर सरकार के विरुद्ध एंटी इंकम्बैंसी का फैक्टर भी माना जा रहा है। वैसे देखा जाए तो मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान की विदाई के बाद मनोहर लाल खट्टर की विदाई भी लगभग तय ही मानी जा रही थीं, क्योंकि मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री के तौर पर शिवराज सिंह चौहान की छवि बेहद अच्छी मानी जा रही थी। साथ ही शासन और प्रशासन में उनकी भूमिका भी किसी प्रकार के वाद-विवाद अथवा संदेह से परे थी। उसके बावजूद जब उन्हें बैठा दिया गया, तब भला मनोहर लाल खट्टर की विदाई कैसे नहीं होती। वैसे शिवराज सिंह और मनोहर लाल, दोनों को इस बार पार्टी ने एक ही तरीके से सरकार से बाहर का रास्ता दिखाया। दोनों घटनाओं में कई समानताएं भी हैं, यथा दोनों को अचानक हटाया जाना, दोनों के करीबियों को ही मुख्यमंत्री के रूप में चुना जाना और इन दोनों के हाथों ही नए मुख्यमंत्रियों को मुस्कुराते हुए ताज पहनवाना आदि। हालांकि दोनों घटनाओं में एक बड़ा अंतर भी है और वह यह कि दोनों पूर्व मुख्यमंत्रियों की मुस्कराहटों में बड़ा अंतर था।**

चेतनादित्य आलोक।

आमतौर पर राजनीति के क्षेत्र में आने वाले तूफानों की भविष्यवाणी करना बेहद मुश्किल कार्य होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो राजनीतिक तूफानों का पुरोवाक् लिखना बहुत कम लोग ही जानते हैं... और जो जानते हैं वे तूफानों के आने पर विचलित नहीं होते, बल्कि शांत और प्रसन्न किंतु गतिशील बने रहते हैं। देखा जाए तो मंगलवार को हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के साथ कुछ-कुछ ऐसा ही हुआ। दरअसल, घटनाक्रम कुछ इस प्रकार आगे बढ़ा कि 11 मार्च को गुरुग्राम पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर की भूरी-भूरी प्रशंसा की और दूसरे दिन दोपहर तक खट्टर सरकार से बाहर हो गए या कर दिए गए, जिसे जो उचित लगे उसे वही समझ लेने की यहां पूरी गुंजाइश है।

गौरतलब है कि खट्टर के साथ व्यतीत किए गए अपने पुराने दिनों की याद ताजा करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने मनोहर लाल की प्रगतिशील मानसिकता के बारे में खुलकर बात की थी। गुरुग्राम में खट्टर के साथ मंच साझा करते हुए उन्होंने कहा- जब दरी पर सोने का जमाना था, तब भी हम साथ थे। उस समय इनके (खट्टर के) पास एक मोटरसाइकिल थी। हम लोग उसी पर सवार होकर हरियाणा भ्रमण करते थे। प्रधानमंत्री ने कहा कि खट्टर मोटरसाइकिल चलाते थे और वे पीछे बैठा करते थे। हम रोहतक से निकलते थे और गुरुग्राम आकर रुकते थे। आश्चर्य होता है कि 11 मार्च को प्रधानमंत्री ने ये बातें कहीं और 12 मार्च को सुबह अचानक ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और जननायक जनता पार्टी (जजपा) के बीच दरार एवं मुख्यमंत्री खट्टर के इस्तीफे की चर्चा शुरू हो गई। दृश्य मीडिया जगत् यानी टीवी के खबरों की दुनिया में यह खबर सनसनी की तरह फैली और जब तक यह अपना पूरा प्रभाव छोड़ती तब तक यह खबर अपनी अंतिम परिणति तक पहुंच चुकी थी। तात्पर्य यह कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को बाहर का रास्ता दिखाया जा चुका था। राजनीतिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो मुख्यमंत्री खट्टर को तो जाना ही था, बल्कि सच कहा जाए तो उन्हें थोड़ा और पहले जाना चाहिए था। इससे नई सरकार को जनता के बीच अपना फेस-ऑफ करने तथा काम के बल पर अपनी इमेज बनाने का भरपूर समय मिल सकता था। गौरतलब है कि खट्टर का दूसरा कार्यकाल इसी वर्ष अक्तूबर में पूरा होना था। जाहिर है कि अक्टूबर में हरियाणा में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में लगभग 69 वर्षीय थके-हारे से दिखाई देने वाले सहज और सरल स्वभाव के स्वामी मनोहर लाल खट्टर के भरोसे भाजपा हरियाणा के दंगल में नहीं उतरना चाहती थी। यही नहीं, कुछ ही महीने पूर्व हरियाणा में हुए सांप्रदायिक दंगे के दौरान मुख्यमंत्री खट्टर का ढिलाई से पेश आना भी उनकी विदाई का एक बड़ा कारण रहा है। दरअसल, सांप्रदायिक दंगे के प्रति उनके सख्त नहीं होने से सरकार की छवि धूमिल हुई थी, जो भाजपा सुप्रीमो को रास नहीं आया था। एक ओर जहां शिवराज सिंह चौहान की मुस्कराहट के पीछे कुछ खोने का दर्द और अफसोस का भाव स्पष्ट देखा जा सकता था, वहीं, मनोहर लाल खट्टर की मुस्कराहट हमेशा की तरह सहज, सरल और शालीन बनी हुई थी। गौरतलब है कि राजनीति में मुस्कराहटों का अपना एक फलसफा होता है। ये मुस्कराहटें बहुत कुछ कहती हैं। ये पीछे छूट चुके समय के दर्द और दुख को तो बताती ही हैं, साथ ही आगत खुशियों और परेशानियों को भी बयां करने में सक्षम होती हैं। गौर करें तो उपर्युक्त दोनों घटनाओं में ऐसा ही हुआ है। जहां शिवराज सिंह चौहान नाराज और दुखी हैं, वहीं मनोहर लाल खट्टर खुश और आश्वस्त हैं। मुख्यमंत्री पद से हटाए जाने के बाद दोनों नेताओं की भाव-भंगिमाओं को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि शिवराज सिंह अपनी विदाई को लेकर अनजान थे, जबकि मनोहर लाल को पता था कि अब राज्य में उनकी भूमिका खत्म हो गई है और केंद्र में मोदी जी के साथ कार्य करने का समय आ चुका है। बहरहाल, घटनाक्रम इतनी तीव्रता से आगे बढ़ता चला गया कि लोग एक के बाद एक क्रमशः बदलते परिदृश्यों में उलझकर रह गए। यह सोचकर लोग हैरत में थे कि 11 मार्च को मादी जी ने खट्टर की प्रशंसा की, 12 को दोपहर तक वे हटा दिए गए और शाम होते-होते उनके बेहद करीबी माने जाने वाले और कभी उनके मातहत रहने वाले राजनेता नायब सिंह सैनी राज्य के 11वें मुख्यमंत्री बना दिए गए। बता दें कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी हरियाणा में भाजपा का बड़ा ओबीसी चेहरा हैं। फिलहाल वे भाजपा से लोकसभा के सदस्य हैं, जो हरियाणा में कुरुक्षेत्र निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। सैनी राजनीति में आने से पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़े थे। आरएसएस में रहते हुए ही उनकी मुलाकात तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर से हुई थी, जिसके कुछ समय बाद ही वे भाजपा में शामिल हो गए थे। इस प्रकार उनकी राजनीतिक यात्रा भाजपा के एक कार्यकर्ता के तौर पर शुरू हुई थी। उसके बाद उन्होंने हरियाणा में ही पार्टी के स्थानीय स्तर के कई कार्यालयों में कार्य किया। वर्ष 2010 में पार्टी ने उन्हें नारायणगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ाया, जिसमें वे रामकिशन गुर्जर से हार गए। पुनः 2014 में उन्हें पार्टी ने टिकट दिया और इस बार उन्होंने 24,361 मतों से जीत दर्ज की। बाद में वे हरियाणा सरकार में राज्य मंत्री भी बनाए गए थे। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी पार्टी के लिए ओबीसी का वोट बैंक माने जाते हैं। वे लंबे समय से पार्टी के लिए एक वफादार सिपाही के रूप में जो भी जिम्मेदारी दी गई, उसे बेहद कुशलतापूर्वक पूरा करते रहे हैं। उनकी इसी वफादारी एवं कार्य कुशलता के गुण को पुरस्कृत करते हुए पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व की ओर से उन्हें इतनी बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है। अब उनके पास समय बहुत कम बचा है। विधानसभा चुनाव की बात करें तो इसकी तैयारियों के लिए उनके पास अधिकतम सात महीने ही बचे हैं, जबकि लोकसभा चुनाव के लिए तो उतना समय भी नहीं बचा है।

## आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, आपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारस्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताप और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

**मेष**
शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। पूंजी निवेश करने वालों को चाहिए कि वे सावधानीपूर्वक पूंजी निवेश करें। नए कार्यों को प्रारंभ कर सकेंगे। आपके दिन का आरंभ शारीरिक और मानसिक स्वस्थता से होगा। आप खुश रहेंगे।

**वृष**
व्यापार में आप उत्साहपूर्वक काम करेंगे। सरकारी काम आसानी से पूरे होंगे। सामाजिक दृष्टिकोण से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। धन के निवेश के लिए समय अनुकूल है। परिवार में संतान और पत्नी से आर्थिक लाभ होगा।

**मिथुन**
आज आपको धन की आय कम और व्यय अधिक होगा। आंखों में दर्द रह सकता है। मानसिक चिंता भी रहेगी। वाणी में संयम बनाए रखें। किसी बात को लेकर उलझन में रह सकते हैं। दोपहर के बाद आपकी समस्या सुलझने लगेगी।

**कर्क**
आर्थिक दृष्टि से लाभ होगा। शारीरिक और मानसिक परिस्थिति में भी सुधार दिखेगा। परिवार के साथ हंसी-खुशी में दिन बीतेगा। आज आपके मन में क्रोध और आवेश की भावना रहेगी। बिजनेस में कर्मचारीयों का व्यवहार नकारात्मक रहेगा। संतान के विषय में चिंता सताएगी।

**सिंह**
आज विरोधियों और प्रतिस्पर्धियों के साथ वाद-विवाद में ना पड़ें। संतान के साथ मतभेद हो सकता है। दोपहर के बाद घर, कार्यालय या व्यापार स्थल पर अधिकारियों या सहयोगियों का व्यवहार नकारात्मक होगा।

**कन्या**
आपकी आज की सुबह आनंदप्रद और लाभप्रद रहेगी। व्यवसाय में लाभ होगा। सामाजिक क्षेत्र में आपकी प्रशंसा होगी। परिवार में भी आनंद का वातावरण रहेगा, परंतु दोपहर के बाद स्थितियां बदलेंगी। क्रोध करने से हानि होने की आशंका बनी रहेगी। शारीरिक अस्वस्थता रह सकती है।

**तुला**
संतान के लिए चिंता रह सकती है। मैरिड कपल के बीच रोमांस बना रहेगा। सरकारी काम आसानी से पूरे होंगे। पार्टनरशिप के काम में लाभ मिलेगा। आज आपको हर मामलों में सावधान होना पड़ेगा।

**वृश्चिक**
परिजन और मित्रों के साथ आनंदपूर्वक समय गुजारेंगे। आज खर्च अधिक न हो, इस पर नियंत्रण रखें। हालांकि, दोपहर बाद किसी निवेश में ध्यान से पैसा लगाएं। नौकरीपेशा लोगों को साथी कर्मचारियों का साथ मिलेगा।

**धनु**
किसी बात की चिंता आपको हो सकती है। वाणी में संयम रखना होगा अन्यथा किसी से विवाद हो सकता है। ईश्वर का ध्यान और आध्यात्मिक विचार मन को शांति देंगे। आज आपका शारीरिक और मानसिक सेहत अच्छा रहेगा।

**मकर**
स्वास्थ्य की दृष्टि से आज का दिन शुभ नहीं है। मन में चिंता रहेगी। परिजनों के साथ वाद-विवाद हो सकता है, परंतु दोपहर के बाद आपका मन खुश रहेगा। दोस्तों के साथ बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। खर्च पर अंकुश रखें।

**कुंभ**
जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिंता रह सकती है। आर्थिक कामों में आज कोई अड़चन आ सकती है। मित्रों और रिश्तेदारों के मिलने से मन खुश रहेगा। व्यापार में भागीदारी के काम में आपको लाभ मिलेगा।

**मीन**
आज आपका मन बेचैन रहेगा। किसी बात को लेकर कुछ ज्यादा ही इमोशनल रहेंगे। आज किसी के साथ वाद-विवाद में न उतरें। स्वजनों, स्नेहीजनों के साथ विवाद हो सकता है। आपका मानभंग होने का प्रसंग न बनें, इसका ध्यान रखें। नए काम की शुरुआत आज ना ही करें।

## आज का इतिहास

### 17 मार्च की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- आगरा के युद्ध में बाबर से 1527 में चित्तौड़गढ़ के राणा संग्राम सिंह प्रथम पराजित हुए।
- नीदरलैंड के खिलाफ इंग्लैंड ने 1672 में युद्ध की घोषणा की।
- ईस्ट इंडिया कंपनी और मराठा शासकों के बीच 1782 में सल्बाई की समझौता हुआ।
- लंदन के स्टीफन पेरी ने 1845 में रबर बैंड का पेटेंट कराया।
- ताइवान में 1906 में आए भूकंप में लगभग 1000 लोगों की जान गई।
- अमेरिका में राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी रुजवलेट द्वारा 1942 में दुनिया में कला के बेहतरीन संग्रहों में से एक नेशनल गैलरी ऑफ आर्ट को खोला गया।
- बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा सन 1959 में तिब्बत से भारत पहुंचे।
- बाली द्वीप पर 1963 में ज्वालामुखी फटने से तकरीबन 2000 लोगों की जान गयी।
- आईबीएम ने 1987 में पीसी-डीओएस 3.3 वर्जन जारी किया।
- भारतीय क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने 1987 में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लिया।
- अर्जेन्टीना में स्थित इजरायली दूतावास पर 1992 में हुए हमले में लगभग 30 लोग मरे।
- श्रीलंका ने ऑस्ट्रेलिया को 1996 में हुए क्रिकेट विश्वकप के फाइनल में सात विकेट से हराकर खिताब जीता।

### 17 मार्च को जन्मे व्यक्ति

- 1922 में अमेरिकी दार्शनिक पैट्रिक सप्पस का जन्म।
- 1946 में महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण का जन्म।
- 1962 में भारतीय अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला का जन्म हुआ।
- 1990 में बैटमिंटन प्लेयर सायना नेहवाल का जन्म हुआ था।

## विशेष आलेख

# बीजेनी टिकट हासिल करने के लिए क्या करना होता है? किस आधार पर भाजपा केंद्रीय चुनाव समिति नामों को मंजूरी देती है?

नीरज कुमार दुबे।

लोकसभा चुनावों से पहले भाजपा अबकी बार 400 पार का नारा लगा रही है। यह नारा हकीकत बनता है या नहीं यह तो चुनाव परिणाम बाद ही पता चलेगा लेकिन इतना तो है कि चुनावी तैयारियों के लिहाज से भाजपा इस समय अन्य दलों से काफी आगे नजर आ रही है। आम चुनावों की तारीखों की घोषणा से पहले भाजपा अपने उम्मीदवारों की दो सूची जारी कर चुकी है। इस दौरान देखने को मिला कि सिर्फ मीडिया ही नहीं बल्कि जनता भी भाजपा उम्मीदवारों की सूची में शामिल नामों को जानने के लिए उत्सुक थी। ऐसा प्रतीत हुआ कि भाजपा की उम्मीदवारी हासिल करना ही जीत की गारंटी है। शायद इसी गारंटी के लालच में ही चुनावों से पहले कई नेताओं ने दल बदल कर भाजपा का दामन थाम लिया तो कई ऐसे नेता भाजपा में लौट आये जोकि कुछ समय पहले कहीं और चले गये थे।

चुनावों से पहले जिस तरह भाजपा से लोकसभा चुनाव का टिकट हासिल करने के लिए होड़ दिखी वह अभूतपूर्व थी। हमने भाजपा के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में कई ऐसे लोगों को भी पाया जोकि भाजपा से जुड़े हुए नहीं थे लेकिन वहां इसलिए आ गये थे ताकि पार्टी नेताओं को देश के लिए काम करने के अपने विजन के बारे में बता कर उम्मीदवारी हासिल कर सकें। इन लोगों का विश्वास था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राज में भाजपा का टिकट हासिल करने के लिए वरिष्ठ नेताओं की परिक्रमा करनी जरूरी नहीं है और अब सिर्फ योग्यता के आधार पर ही किसी को उम्मीदवार बनाया जाता है। देखा जाये तो यह लोग कुछ हद तक सही भी थे लेकिन भाजपा के काम करने के तरीके से अनजान थे इसलिए जब वह सीधे लोकसभा चुनाव का टिकट मांग रहे थे तो वहां खड़े लोग मुस्कुरा रहे थे। इसलिए आइये आपको समझाते हैं कि भाजपा आखिर किस आधार पर किसी को पार्टी का उम्मीदवार बनाती है। सबसे पहले तो आपको यह समझना होगा कि भाजपा चुनावों से ठीक पहले या चुनावों की घोषणा के बाद ही उम्मीदवारों की तलाश शुरू नहीं करती है बल्कि उसकी यह प्रक्रिया सतत रूप से चलती रहती है। मसलन जैसे अभी लोकसभा चुनाव होने हैं तो उसके लिए उम्मीदवारों के नामों पर मंथन डेढ़ साल से चल रहा है। अभी भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति की जो दो बैठकें हुई हैं उनमें सिर्फ उन नामों पर मुहर लगाने का काम हुआ है जोकि पार्टी की विभिन्न समितियों ने केंद्रीय चुनाव समिति को तमाम तरह की रिपोर्टों के साथ संलग्न करके भेजे थे। हमारे पास सूत्रों के हवाले से जो खबरें हैं उसके मुताबिक आइये आपको समझाते हैं जब भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक होती है तो उसमें क्या होता है। उदाहरण के लिए लोकसभा चुनावों की ही बात करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति वाली बैठक में पार्टी अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्यों को सबसे पहले यह बताते हैं कि आज किन राज्यों की सीटों पर चर्चा होनी है। इसके बाद उस राज्य से भाजपा मुख्यालय में पहले से आकर बैठे हुए पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष, मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री या विधायक दल का नेता, राज्य के पार्टी प्रभारी और यदि किसी केंद्रीय मंत्री के पास उस राज्य का प्रभार है तो उनको भी बैठक में बुला लिया जाता है। मान लीजिये कि उस राज्य में 25 सीटें हैं। सबसे पहले उन सीटों पर चर्चा की जाती है जहां किसी को फिर से मौका देना है। प्रदेश अध्यक्ष एक-एक कर सीट का नाम बोलते हैं और बैठक कक्ष में मौजूद बड़ी स्क्रीन पर उस सीट के दावेदारों का परिचय फोटो के साथ एक-एक करके आता रहता है। सभी दावेदारों के आगे विभिन्न सर्वेक्षणों की रिपोर्ट के अलावा यह भी लिखा होता है कि उन्होंने पार्टी के कार्यों में कितनी रुचि दिखाई, विवादों में कितना घिरे रहे, संसदीय कार्यों में कितनी रुचि ली, संसद में कितनी उपस्थिति रही, सरकार की योजनाओं और उपलब्धियों को जनता तक पहुँचाने के अभियान में क्या योगदान दिया, स्थानीय स्तर पर पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ कैसा व्यवहार रहा, संसदीय क्षेत्र में जो वादे किये थे उन्हें कितना पूरा किया। इसके अलावा उस क्षेत्र के राजनीतिक और सामाजिक समीकरणों से संबंधित ग्राफ के अलावा उस सीट पर विपक्ष की ओर से खड़ी की जाने वाली चुनौतियों पर चर्चा की जाती है। राज्य के नेता एक-एक करके हर दावेदार के नाम के गुण और दोष बताते हैं। उसके बाद भाजपा संगठन के राष्ट्रीय महासचिव उन एजेंसियों की सर्वेक्षण रिपोर्ट दिखाते हैं जो भाजपा ने उस क्षेत्र के संभावित प्रत्याशियों को लेकर करवायी होती है। वह यह भी बताते हैं आरएसएस और उसके आनुषांगिक संगठनों की ओर से उस क्षेत्र के प्रत्याशी के लिए क्या फीडबैक मिला है।

इसके बाद केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्य उन नामों पर अपनी राय रखते हैं और जो नाम तय होते जाते हैं उन्हें केंद्रीय चुनाव समिति के सचिव अलग से नोट करते रहते हैं। जिन नामों पर केंद्रीय चुनाव समिति का कोई सदस्य या खुद प्रधानमंत्री उस पर आपत्ति जता दें तो फिर पार्टी की प्रदेश इकाई को उस सीट के लिए और नाम सुझाने के लिए कहा जाता है।

# पहली बार मतदाता बने युवाओं की लोकतंत्र के उत्सव में बड़ी भूमिका

खिलाड़ी अपने समर्पण, दृढ़ता और टीम भावना के माध्यम से देश की सेवा करते हैं। चाहे घरेलू मैदान हो या विदेशी, देश की जर्सी पहनना एक विशेषाधिकार और जिम्मेदारी दोनों है। लेकिन दुनिया के सबसे जीवंत लोकतंत्र के एक अभिन्न अंग के रूप में हम खिलाड़ी और युवा भारतीय एक और विशेषाधिकार की आकांक्षा करते हैं-वह है मतदान। चुनाव लोकतंत्र का आधार होता हैं, जो नागरिकों को अपने प्रतिनिधियों को चुनने का महत्वपूर्ण अधिकार देता है। हालांकि, यह अधिकार निष्क्रिय नहीं है, चुनावी प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होना एक कर्तव्य है, विशेषकर युवाओं का। ऐतिहासिक रूप से, युवाओं ने सामाजिक परिवर्तन का नेतृत्व किया है और चुनावों में उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण है। लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए, मतदाता पंजीकरण से लेकर जमीनी स्तर पर प्रचार अभियान तक के प्रत्येक चरण में युवाओं की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। पहली बार के मतदाता नए दृष्टिकोण के साथ पारदर्शिता और समावेश जैसे आदर्श लेकर आते हैं। एक युवा मतदाता की ऊर्जा और तकनीक-प्रेमी प्रकृति, चुनावी परिदृश्य को जीवंत बनाती है तथा नागरिकों की जरूरतों के अनुरूप पहुंच और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देती है। युवा निर्वाचित प्रतिनिधियों को जवाबदेह बनाने एवं जनता से जुड़े मुद्दों का समर्थन करने व आवाज उठाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा इस प्रकार लोकतंत्र के महत्व और इसके प्रति निष्ठा की रक्षा करते हैं। महात्मा गांधी के शब्दों में, भविष्य इस पर निर्भर करता है कि आप आज क्या करते हैं। लोकतंत्र का पहिया एक बार फिर से घूम रहा है, भारत में आम चुनाव, 2024 की तैयारी चल रही है, ऐसे में राष्ट्र के भाग्य को स्वरूप देने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया जाना जरूरी है। अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने चुनावी प्रक्रिया में युवाओं की सहभागिता के महत्व पर जोर दिया और पहली बार मतदाता बने युवाओं के लिए लक्षित निर्वाचन आयोग के मेरा पहला वोट देश के लिए अभियान के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने भारत के युवाओं के जोश और उत्साह की सराहना की तथा उनसे सक्रिय रूप से मतदान में भाग लेने की अपील की क्योंकि देश के भविष्य पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। पहली बार मतदाता बने युवाओं से रिकॉर्ड संख्या में भाग लेने की अपील करते हुए, उन्होंने देश की नियति को आकार देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने विभिन्न सेक्टरों से जुड़े प्रभावशाली लोगों से अभियान में शामिल होने तथा सामाजिक बदलाव को प्रेरित करने में उनकी प्रभावी भूमिका को स्वीकार करते हुए युवा मतदाताओं को प्रोत्साहित करने की अपील की। चुनावी माहौल के बीच, उन्होंने युवाओं से न केवल राजनीतिक कार्यकलापों में भाग लेने का आग्रह किया बल्कि वर्तमान में जारी चर्चाओं और बहसों के बारे में भी जानकारी रखने की अपील की।

भारतीय निर्वाचन आयोग चुनावों में युवाओं की सार्वजनिक प्रबुद्ध सहभागिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मेरा पहला वोट देश के लिए अभियान चला रहा है। केंद्रीय मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने अभियान गीत लॉन्च किया जो युवा मतदाताओं को उनके लोकतांत्रिक अधिकार का उपयोग करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने की देश की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह अभियान गीत मतदाता जागरूकता अभियान का एक हिस्सा है जो चुनावी प्रक्रिया में युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी की अपील की भावना का प्रतीक है। देश भर के युवा इस अभियान गीत को अपने युवा मित्रों को मतदान करने के लिए प्रोत्साहित करने के आह्वान के रूप में अपना रहे हैं।

इस पहल के तहत उच्च शिक्षा संस्थान (एचईआई) देश भर में मतदाता जागरूकता कार्यकलापों का आयोजन कर रहे हैं और अधिक प्रतिनिधि लोकतंत्र के लिए मतदान करने के मूल्य पर जोर दे रहे हैं। जहां उच्च शिक्षा संस्थान वास्तविक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं, ऑनलाइन प्रतियोगिताएं भी माईगव प्लेटफॉर्म पर आयोजित की जा रही हैं जिनमें ब्लॉग लेखन, पॉडकास्ट, वाद-विवाद आदि का आयोजन किया जा रहा है जिससे कि कंटेंट सृजन में रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया जा सके।